UGC List No.: 40724

ISSN : 0973-1210

सामाजिक शोध पत्रिका
JOURNAL OF SOCIAL RESEARCH

Volume : XIV No.: 1 Year : June, 2018

UGC Approved Journal

Peer Reviewed

Affiliated to International Social Sciences Network

RESEARCH JOURNAL PUBLISHED BY BADLAV SANSTHAN

ADVISORY BOARD

Adv.Fateh Singh Mehta : Legal Advisor - Ex Chairman, Rajasthan Bar Council
Prof. Hemant Kothari : Dean, P.G. Studies, Pacific University Udaipur ,Raj
Prof. D.R. Sahu : Professor, Deptt.of Sociology, Lucknow University,U.P.
Prof.K K N Sharma : Head, Deptt. of Anthropology,Dr. Harisingh Gour, Central University,Sagar,M.P.
Prof. Dharmasheela Prasad : Head, Department of Sociology,Patna University,Bihar
Prof. Prem Kumar : Head, Deptt. of Sociology,Kurukshetra University, Haryana
Prof.R. H. Makwana : Head,Department of Sociology, Sardar Patel University,Vallabh,Gujarat
Prof. Arvind Chauhan : Head, Deptt. of Sociology, Barkatullah, University, Bhopal (M.P.)
Prof. Prabhat Kr. Singh : Head, Deptt. of Sociology,Ranchi University,Jharkhand
Prof. P. M. Yadav : Head, Dept. of Sociology, M.L.S.U.,Udaipur ,Rajasthan
Prof. Vishnu Sarvade : Professor, Deptt.of Hindi, Mumbai University, Maharashtra
Prof. Desraj : Professor, Deptt. of Sociology, M.D. University, Rohtak ,Haryana
Prof. Amman Madan : Professor, Deptt. of Socio. & Anthro., Azim Prem Ji University, Banglore (Kt)
Prof. Pranjal Sharma : Head, Deptt. of Sociology, Dibrugarh University, Assam
Prof. V.S. Rathore : Head, Deptt. of Physical Education, G. G. Central University, Bilaspur (C.S.)

EDITORIAL BOARD

Dr. S. K. Mishra Chairman
Dr. Shri Ram Arya Chief Editor
Dr. Suresh Salvi Associate Editor
Dr. Raju Singh Executive Editor
Dr. Hemlata Verma Managing Editor

PEER REVIEW BOARD

Dr. Monika Dave Chairman
Dr. Anju Beniwal Secretary
Dr. Vineeta Srivastava Convener
Dr. Lala Ram Jat Coordinator

HON'BLE MEMBERS

Dr. Vinita Singh : Assoc. Professor, Deptt. of Sociology, Ranchi University, Jharkhand
Dr. Gaurang Jami : Assoc. Professor, Deptt. of Sociology, Gujarat University
Dr. Arun Kumar : Assoc.Prof. ,Deptt. of Pol. Sc., S.R.P.Govt. P.G. College, BandiKui, Rajasthan
Dr. Maneeram Meena : Assoc.Prof.,Deptt. of Sociology, S.M.B. Govt. P.G. College, Nathdwara, Raj.
Dr. Sangeeta Nagarwal : Assoc.Prof. ,Deptt. of History,S.R.P. Govt. P.G. College, BandiKui, Raj.
Dr. Shilpa Mehta : Assoc.Prof. ,Deptt. of History,S.M.B. Govt. P.G. College, Nathdwara, Raj.
Dr. B. R. Patel : Asstt.Director,Physical Education, M.L.S.U. Udaipur ,Rajasthan

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, प्रधान सम्पादक एवं मुद्रक डॉ. श्रीराम आर्य द्वारा रज़ा प्रिन्टर्स, उदयपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

ISSN : 0973-1210 JSR-Vol. XIV, No. 1, Year June 2018

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय		पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय		1
2.	उदयपुर के नगरीकरण का आहड़ नदी पर प्रभाव	– रोड़ सिंह देवड़ा	3–6
3.	नैषधीयचरित महाकाव्य में स्त्री–पात्र	– मोनिका पण्ड्या	7–9
4.	सिन्धी समुदाय में शिक्षा से सामाजिक परिवर्तन	– श्वेता झाम्भ	10–13
5.	माध्यमिक स्तर पर वैदिक गणित के प्रति विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं समस्याएँ	– डॉ. अभय कुमार शर्मा	14–18
6.	सामुदायिक वन अधिकार – दशा और दिशा	– डॉ. मीना सुहेल	19–23
7.	जनजातीय समाज में मातृ–शिशु स्वास्थ्य पर भौतिक सुविधाओं का प्रभाव	– रणजीत कुमार मीणा	24–27
8.	स्वयं सहायता समूह समस्या समाधान का एक मंच	– रतन भूदरा	28–29
9.	माध्यमिक विद्यालयों में जनतांत्रिक अभिवृत्ति एवं इसे प्रभावित करने वाले कारक	–डॉ. अभयकुमार शर्मा	30–32
10.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं वनीय अन्तर्संबंध वर्तमान परिप्रेक्ष्य	– डॉ. मीना सुहेल	33–36
11.	पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय की प्रधान पीठ नाथद्वारा का ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं धार्मिक विवेचन	–रेखा सोनी	37–40
12.	घरेलू हिंसा से महिलाओं के संरक्षण अधिनियम के कियान्वयन की स्थिति का अध्ययन	– डॉ. लालाराम जाट, डॉ. अनिला	41–49
13.	अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव	– सुनील कुमार भाटी, डॉ. राजूसिंह	50–53
14.	जनजाति समाज में दूरस्थ शिक्षा : बांसवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में	– रश्मि पण्ड्या	54–56
15.	अविवाहित महिलाएं : सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति	– पिंकी शर्मा	57–58
16.	अबेकस प्रशिक्षित एवं गैर प्रशिक्षित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन	– यतीन कुमार चौबीसा	59–61
17.	कृषक समाज में कृषि व्यवसाय असन्तोष का कारण	– डॉ. लालाराम मीणा, डॉ. मनीराम मीणा	62–63
18.	तलाक : निर्णय उचित या अनुचित	– पिंकी शर्मा	64–65
19.	Urbanisation and Economic Growth-A Formidable Challenge	- Dr. Monika Dave	66-72
20.	Exercise of concurrent powers in Health and Social Welfare Sector	- Dr. Anju Beniwal	73-79
21.	Agarian Policy of Britishers Related to Opium	- Dr. Shilpa Mehta	80-82
22.	Human-Ape Relationship : with Reference to *Ramcharitmanas* and *Dawn of the Planet of the Apes.*	- Gaurav Bhimawat	83-85
23.	New Professionals Role as Entrepreneur : A Study	- Dr. Meeta Solanki	86-90
24.	International Trade and Economic Relations : Role of WTO	- Pinky Kumari	91-94
25.	Conference Brochure		95-96

ISSN : 0973-1210 JSR-Vol. XIV, No. 1, Year June 2018

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

सुनील कुमार भाटी *

डॉ. राजूसिंह **

आधुनिकीकरण एक सतत् व निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हैं, यह एक बहुदिशा में होनें वाला परिवर्तन हैं न कि किसी क्षेत्र विशेश में होने वाला परिवर्तन। यह शक्ति के जड़ स्त्रोतों और प्रयत्न के प्रभाव को बढ़ाने के लिए उपकरणों के प्रयोग पर आधारित हैं। साधारणतः आधुनिक होने का अर्थ फैशनेबल से लिया जाता हैं। आधुनिकीकरण एक सांस्कृतिक प्रत्यय माना हैं जिसमें तार्किकता, अभिवृति, दृष्टिकोण, परानुभूति, वैज्ञानिक विश्व–दृष्टि, मानवता, प्रौद्योगिक प्रगति, आदि सम्मिलित हैं। आधुनिकीकरण पर किसी एक ही जातिय समूह या सांस्कृतिक समूह का स्वामित्व नहीं मानते वरन् सम्पूर्ण मानव समाज का अधिकार मानते हैं। आधुनिकीकरण एक ऐसी मनोवृत्ति का परिणाम हैं जिसमें यह विश्वास किया जाता हैं कि समाज को बदला जा सकता हैं और बदला जाना चाहिए तथा परिवर्तन वांछनीय हैं। आधुनिकीकरण का एक सशक्त साधन शिक्षा मानते हैं क्योंकि शिक्षा ज्ञान की वृद्वि करती हैं। मूल्यों तथा धारणा में परिवर्तन लाती हैं जो आधुनिकीकरण के उद्धेश्य तक पहूँचने के लिए बहुत आवश्यक हैं। आधुनिकीकरण के परिणाम– स्वरुप ही जातियों की पारस्परिक दूरी कम हुई हैं। जातियाँ नए रुप में संगठित हो रही हैं, तथा उनके स्थानीय, प्रान्तीय और राष्ट्रीय संगठन बने हैं। धार्मिक विश्वास के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुए हैं कर्मकाण्ड़ व भाग्यवादिता में विश्वास कम हुआ हैं एवं नास्तिकता में वृद्धि हुई हैं। नयी शिक्षा–प्रणाली, नयी अर्थव्यवस्था, प्रशासन, सामुदायिक विकास योजना, नगरीकरण, औद्योगीकरण, यातायात व संचार, प्रेस, अखबार तथा नंए सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलनों ने उपरोक्त परिवर्तन करने में अपनी महत्ती भूमिका प्रदान की हैं। तथा सभी जाति, वर्ग, समुदाय पर स्पश्ट रुप से देखा जा सकता हैं। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों कि जीवन शैली व सामाजिक मूल्यों में तीव्रगति से होने वाले परिवर्तन तथा व्यवसायिकता गतिशीलता तथा अधिकारों के प्रति सजगता व जागरुकता में वृद्धि आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप ही संभव हो पाया हैं, जो नवीन तकनीक के प्रयोग व शिक्षा को बढ़ावा देती हैं तथा अर्जित प्रस्थिति के महत्त्व को बढ़ाने में तथा अपने जीवन स्तर को उँचा उठाने में आधुनिकीकरण कि प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। आधुनिकीकरण शब्द एक प्रक्रिया का बोध कराता हैं। आधुनिकीकरण से तात्पर्य सतत् एंव लगातार होने वाली क्रिया से हैं, साथ ही आधुनिकीकरण एक विस्तृत प्रक्रिया हैं। आधुनिकीकरण का तात्पर्य समाजों की सामाजिक संरचना में कुछ विशिश्ट स्वरुपों के परिवर्तन से हैं। सामाजिक संम्बधों की व्यवस्थाओं में ये परिवर्तन आधुनिकीकरण के सहवर्ती मानदण्ड़ों पर आधारित नई भूमिकाओं तथ समूह संरचनाओं के विकास एंव स्थायीकरण में योगदान देते हैं। ग्रामीणों के मध्य शिक्षा के माध्यम से तार्किक मूल्यों का समावेश हो रहा हैं। लोग परम्परागत मूल्यों से किनारा करते हुए देखे जा सकते हैं। वर्तमान भारत में परम्परागत मान्यताओं के खिलाफ लोगों की नकारात्मक भावना देखने को मिलती हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्तियों, समूहों एंव समाजों में विश्व के प्रति एक नवीन दृश्टिकोण और परिप्रेक्ष्य का उदय हुआ हैं। ये नवीन परिप्रेक्ष्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों से घनिष्ठ रुप से संबंधित हैं और इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्रता मिली है और कल्याण व विकास जैसे क्षेत्रों में नवीन संभावनाए सामने आयी हैं। यातायात, रेल, संचार, मोटर, समाचार–पत्र, शिक्षा, प्रशासन, सामुदायिक योजनाओं मोबाइल, इन्टरनेट, सोशल मीड़िया आदि ने आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया हैं, जिससे भौतिक ही नहीं, सांस्कृतिक परिवर्तन भी हुए हैं। वही नए मूल्य, विचार, सम्बन्ध, सोच व अपेक्षा भी जन्म ले रही हैं। वर्तमान में लिंग, आयु व सम्बन्ध के आधार पर अधिकार का निर्धारण न होकर, योग्यता, अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर होता हैं। जाति के भेद में व्यवसाय, सस्तंरण, कर्मकाण्ड़ व पवित्रता की धारणा में अपेक्षित परिवर्तन हुए हैं।

आइजनस्टेड (1966)–"ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया हैं जो कि सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक पश्चिमी युरोप तथा उत्तरी अमरीका में और बीसवीं शताब्दी तक दक्षिणी अमेरीका, एशियाई व अफ्रीकी देशों में विकसित हुई "।

शरदकुमार (2008) –"भारत में आधुनिकीकरण के चार आयामों वेयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक स्वरुप की चर्चा की हैं।"

योगेन्द्र सिंह (1986) "आधुनिकीकरण के लिए सबसे प्रमुख उपकरण के रुप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित शिक्षा को माना हैं।"

ए. आर. देसाई (1971) "आधुनिकीकरण को मानव के सभी क्षेत्रों, विचारों में क्रियाओं में होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया माना है "।

*शोधार्थी, समाज शास्त्र, विभाग मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
**सहायक आचार्य, समाज शास्त्र, विभाग मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर

ए.आर.शाह (1956) ने आधुनिकीकरण एवं आधुनिकता में अन्तर करते हुए लिखा हैं कि आधुनिकता को आधुकनकीकरण से अधिक व्यापक मानते हैं, आधुनिकीकरण एक ऐसी सभ्यता की ओर इंगित करता हैं जिसमें साक्षरता तथा नगरीकरण का उच्च स्तर तथा साथ ही लम्बवत् और भौगोलिक गतिशीलता,प्रति व्यक्ति उच्च आय और प्रारम्भिक स्तर से उच्च स्तर की अर्थव्यवस्था जो कमी के स्तर के परे जा चुकी हो, समाविष्ट हैं। "आधुनिकता एक ऐसी संस्कृति को बताती है जिसकी विशेषता का निर्धारण तार्किकता, व्यापक रुप मे उदार दृष्टिकोण, मतों की विविधता तथा निर्णय लेने के विभिन्न केन्द्र, अनुभव के विभिन्न क्षेत्रों में स्वायतता, धर्म–निरपेक्ष आचार–शास्त्र तथा व्यक्ति के निजी संसार के प्रति आदर के रुप में होता हैं।"

अनुसूचित जाति–भारतीय सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित क्रेन्द्रीय तथा महत्वपूर्ण सच्चाई समाज में व्याप्त जाति–व्यवस्था हैं। जिसकी सबसे अधिक प्रभावित अनुसूचित जाति हैं। इस जाति–व्यवस्था की वजह से अनुसूचित जातियाँ जाति श्रेणीक्रम में सबसे निम्न सोपानक्रम पर व्यवस्थित हैं। आम लोगों की यह धारणा रही हैं कि इन जातियों का निम्न स्थान परमात्मा ने निर्धारित किया हैं। इनका यह दोश है कि ये अछूत बना दिया, उन पर निर्योग्यताएँ लाद दी गई और कई शताब्दी तक समाज के बड़े हिस्से को अपमानित जीवन जीने के लिए विवश किया गया। ये जाति शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण के अवसरों का पर्याप्त लाभ नही उठा पा रही हैं। अनुसूचित जाति शब्द का शाब्दिक अर्थ उस जाति या नस्ल या प्रजाति से हैं, जिनके पास सूचना, चेतना या जानकारी की कमी हैं। इसके शाब्दिक अर्थ की पुष्टि भारत सरकार की अनुसूचित जाति की परिभाषा से भी स्पष्ट होती हैं। सरकारी भाषा के अनुसार अनुसूचित जाति वह हैं, जो विकास के निम्न स्तर पर हैं या जो समाज में विशिष्ट हैं और समाज से पीछे हैं। **डी.एन मजुमदार** के अनुसार– "अस्पृश्य जातियाँ वे है जो बहुत सी सामाजिक व राजनीतिक निर्योग्यताओं से पीड़ित है, जिनमें से अधिकतर निर्योग्यताओं को परम्परा द्वारा निर्धारित करके सामाजिक रुप से उच्च जातियों द्वारा लागू किया गया हैं"।

आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया हैं जो समाज को गतिशील व तीव्र बनाने में सहायक हैं। शिक्षा के माध्यम से जातिगत भेदभाव को समाप्त करने तथा सबको समानता का अधिकार प्रदान किया हैं। भारत में शिक्षा के बढ़ते प्रचार और प्रसार के कारण ही अनुसूचित जाति के अन्दर मूल्यों, प्रोद्यौगिकी और वैज्ञानिक खोजों को बढ़ावा मिला हैं, तथा राश्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ हैं। अनुसूचित जाति में पाए जाने वाले अन्धविश्वास, रुढ़ीवादिता, में परिवर्तन आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप ही संभव हो पाया जो शिक्षा के द्वारा संभव हुआ हैं। आधुनिक युग में आधुनिकीकरण का अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों पर प्रमुख प्रभाव अग्रलिखित दिखाई दे रहे हैं–

1. विद्यार्थियों में व्यापक दृश्टिकोण का निमार्ण होना– शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के दृश्टिकोण में व्यापकता लाती हैं, जिससे वह प्राचीन रुढ़ियों, अन्धविश्वासों, सांकीर्णताओं और पूर्वाग्रहों को छोड़कर नवीन और उपयोगी विचारों, आदर्शों और मूल्यों को अपनाने में होता हैं तथा अपनी जीवन शैली में बदलाव सभंव हो पाता हैं।

2. मानसिक विकास के स्तर में वृद्धि होना–शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के मानसिकता में तीव्रगति से परिवर्तन होता है व उसके सोचने, विचार करने, बातचीत करने व उसके व्यवहार मे परिवर्तन शिक्षा के द्वारा ही संभव हैं। जीवन स्तर में वृद्वि व कार्य शैली में बदलाव मानसिक विकास के परिणाम स्वरुप ही संभव हैं, जो उसके सामने नवीन चुनोतीयों व सफलता के लिए प्रेरित करते हैं।

3. विद्यार्थियों के ज्ञान भण्ड़ार में वृद्वि करना– आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा मानसिकता व बौद्विक विकास तीव्र गति से होता है और शिक्षा ऐसी प्रक्रिया हैं। जिससे व्यक्ति के साहित्यक, प्रौद्योगिकी, व्यवसायिकता, प्रशासन, चिकित्सा आदि से सम्बधित ज्ञान के भण्ड़ार में वृद्धि करता है, जिससे उसका चिन्तन तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक बनता हैं।

4. आधुनिकीकरण के द्वारा आर्थिक समृद्धि का होना– विद्यार्थियों में शिक्षा के माध्यम से आर्थिक समृद्धि सम्भव हैं। किसी देश की आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण साधन शिक्षा को माना गया जो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। शिक्षा के द्धारा उत्पादन के नये–नये साधन विकसित होते हैं। प्रबन्ध में कुशलता आती हैं, श्रमिकों की कार्य कुशलता में वृद्धि होती हैं और नयी प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता हैं। नवीन तकनिकी का उपयोग युवा वर्ग द्धारा सर्वाधिक किया जाता हैं जिसके माध्यम से वो परिवार और समाज के विकास को तीव्र गति प्रदान करता हैं जिससे देश को समृद्ध बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं जिससे विद्यार्थियों को रोजगार के नवीन साधन उपलब्ध होते हैं और उनकों परम्परागत व्यवसाय से मुक्ति मिल जाती हैं।

5.विद्यार्थियों में विशेषज्ञों के गुणों का निर्माण–आधुनिकीकरण के माध्यम से विद्यार्थियों में शिक्षा के द्वारा उनको वैज्ञानिक, योजनाकार, प्रबन्धक, शिक्षक, इंजीनियर के रुप में तैयार किया जाता हैं जो अपने ज्ञान व कौशल को विकसित कर देश को सशक्त व विकसित, समृद्धी

प्रदान करे तथा विद्यार्थियों में नवीन तकनिकों का उपयोग कर विद्यार्थियों में नवीन गुणों का विकास किया जा सके।

6. आधुनिकीकरण कि प्रक्रिया, सामाजिक परिवर्तन में सहायक – आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया हैं जो सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करता हैं और शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण, प्रभावशाली और सशक्त साधन हैं। सामाजिक परिवर्तन की दृश्टि से शिक्षा दो कार्य करती हैं एक–शिक्षा यह बताने का प्रयास करती है कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में क्या दोश हैं और उन दोशों को दूर करने से क्या लाभ प्राप्त होगा और दूसरा–नवीन परिवर्तन के लिए भूमिका तैयार करना और उन परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए लोगों को मानसिक रुप से तैयार करना हैं। आधुनिकीकरण प्राचीन परम्परा के स्थान पर नवीन परम्परा का विकास करना तथा रुढ़ीवादिता का त्याग करना, नवीन विचारों व तकनीक का प्रयोग करना।

7. जीवन स्तर का उच्च होना– आधुनिकीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक हैं कि विद्यार्थियों का जीवन स्तर उच्च हों तथा शिक्षा लोगों को सीमित साधनों की सहायता से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने की विधियों का ज्ञान कराती हैं। शिक्षा आर्थिक उन्नति करने के साधन उपलब्ध कराती हैं इस प्रकार शिक्षा जीवन स्तर को उँचा उठाने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

8. नवीन जानकारी प्राप्त करने में सहायक–वर्तमान युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने संसार के मानचित्र को बदल दिया हैं। आये दिन नयी–नयी खोजें और आविष्कार हो रहे हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान के नये द्वार खुल रहे हैं। तीव्र गति से क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिकीकरण के लिए लोगों को इन सबकी जानकारी होना आवश्यक है और यह कार्य शिक्षा ही करती हैं।

9. परम्परा और आधुनिकता में समन्वय स्थापित करने में सहायक–समाज में किसी प्रकार के परिवर्तन होते हैं तो सामाजिक व्यवस्था में असन्तुलन आ जाता हैं। असन्तुलन की यह स्थिति लोगों कों अस्थिर करती है, उनमें असामंजस्यता पैदा करती हैं। वस्तुतः यह सोच उचित नही हैं कि जो पुराना हैं, जो परम्परायें हैं वे सब के लिए उपयोगी नहीं हैं, और जो नया है आधुनिक है,यह सब अच्छा हैं, परम्परा और आधुनिकता दोनों में ही कुछ अच्छा है और कुछ कम उपयुक्त हैं। आधुनिकीकरण के लिए यह आवश्यकता है कि इन दोनों में समन्वय स्थापित किया जाये और यह कार्य शिक्षा के द्वारा किया जाता हैं।

10. विद्यार्थियों में नेतृत्व गुणों का विकास– आधुनिकीकरण के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों का विकास सभंव होता हैं जो उनको निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता हैं वह नई सोच व नवीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता हैं। आधुनिकीकरण ने सबको समानता, स्वतन्त्रता, भेदभाव रहित सबको समान अधिकार के साथ आगे बढ़ने को प्रेरित करता हैं।

11. आधुनिकीकरण के द्वारा विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास– आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप विद्यार्थियों में राश्ट्रीयता की भावना का विकास तथा देश की उन्नति, विकास में भागीदारी को प्रोत्साहन प्राप्त होता हो रहा हैं।

12. विद्यार्थियों में तर्कपूर्ण और सकारात्मक चिन्तन का विकास– आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के परिणाम स्वरुप ही विद्यार्थियों में चिन्तन, तर्क और सकारात्मक सोच को बढ़ावा मिला हैं। जिससे उनकी मानसिक सोच में कई परिवर्तन आए हैं व किसी भी बात को तर्कपूर्ण रुप में प्रस्तुत करने में सक्षम हुए हैं व चिन्तनशीलता का विकास हुआ हैं जिससे समस्याओं का विवकेपूर्ण तरिके से समाधान किया जा सके तथा तार्किकता के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम हो रहे हैं।

13. विद्यार्थियों में बौद्विक क्षमता व कौशल का विकास–विद्यार्थियों में बौद्विक क्षमता व कौशल का विकास आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप ही संभव हो पाया हैं। जो उसने जातिगत व्यवसाय को छोड़कर नए व्यवसाय को अपनाया हैं वह अपनी जीवन शैली को परिवर्तित किया हैं। आधुनिकीकरण कि प्रक्रिया के द्वारा ही सामाजिक, आर्थिक, राजनेतिक, सांस्कृतिक, रुप से ही अपने आप को सक्षम बनाने में सहयोग प्रदान किया हैं, और अपने अधिकारों के प्रति सजग व जागरुक किया हैं।

14. विद्यार्थियों कि जीवन भौली में तीव्रगति से परिवर्तन–आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप ही विद्यार्थियों कि जीवन शैली में तीव्रगति से पविर्तन हो पाए जैसे–रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, भाषा, संस्कृति, आदत, पहनावा, विचार, जीवन जीने के तरिकों में परिवर्तन आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण ही संभव हुआ हैं।

15. आधुनिकीकरण के द्वारा विद्यार्थियों में नवीन तकनीक का उपयोग–विद्यार्थियों में नवीन तकनिक जैसे–संचार के साधन–मोबाईल, इंटरनेट, सोशल मीड़िया का उपयोग, कम्पयुटर, टी.वी.समाचार पत्र, यातायात के नवीन साधनों का प्रयोग, आदि ने तीव्रगति से विद्यार्थियों को प्रभावित किया हैं,जो अपनी सभ्यता व संस्कृति में परिवर्तन को समय के अनुरुप परिवर्तित करने में सहयोग प्रदान किया हैं यह सभी आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप ही सभंव हुआ है जिसनें जीवन शैली में तीव्रगति बदलाव संभव हो पाया हैं।

निष्कर्ष–

आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप नई तकनीक, यातायात के साधन, शिक्षा, मोबाईल, इटंरनेट कृशि में यंत्रीकरण, उन्नत खाद–बीज, मशीनीकरण, आदि के उपयोग ने सभी वर्ग को पुर्णतः प्रभावित किया हैं, इसी के परिणाम स्वरुप समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति कि सोच और मानसिकता को परिवर्तित किया और तार्किक बनाया हैं, और अपने अधिकारों को लेकर जागरुक हुए हैं। आधुनिकीकरण के कारण ही शिक्षा, राजनीति, व्यापार, खेल, आदि में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों ने भाग लेकर उच्च स्थान प्राप्त किया हैं तथा समाज में प्रेरणा प्रदान करने का काम किया जिससे लोगों कि सोच, व्यवहार, मानसिकता, को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। अपने अधिकारों को लेकर आए दिन संघर्ष होते रहते हैं यह सभी परिवर्तन आधुनिकीकरण के कारण ही हो पाया हैं। प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति का महत्व बढ़ा तथा परम्परागत व्यवसाय के स्थान पर आधुनिक व्यवसाय में तीव्र गति से वृद्वि हुई। राजनीति में सक्रिय भागीदारी बढ़ी, तथा अन्धविश्वास, रुढीवादिता, भाग्यवादिता में कमी हुई। आधुनिकीकरण एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है जो आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैयक्तिक आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त हैं। आर्थिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण का अर्थ औद्योगीकरण, अधिक उत्पादन, मशीनीकरण, मुद्रा का महत्व तथा नगरीकरण में वृद्वि इत्यादी से हैं। जिसका प्रयोग सामाजिक परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिए विविध प्रकार से किया गया हैं। एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज में लगातार व निरन्तर होने वाली क्रिया से हैं। जिसने सबसे ज्यादा प्रभावित युवा वर्ग को किया हैं,उनकी जीवन शैली को परिवर्तित किया हैं, आधुनिकीकरण के प्रभाव के परिणाम स्वरुप ही जीवन शैली में व्यवसाय की स्वंत्रता, विचारों में बदलाव आदी आधुनिकीकरण के प्रभाव के परिणामस्वरुप ही संभव हुआ हैं। यह सब शिक्षा, तकनीकि के द्वारा ही संभव हो सका हैं, जिसमें युवाओं की भागीदारी होती हैं। सामाजिक संरचना में परिवर्तन हो जाता हैं जिसके परिणामस्वरुप युवाओं के व्यवसायिक एंव राजनीतिक कार्यों में भी परिवर्तन आ जाता हैं तथा युवाओं में प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति का महत्त्व बढ़ जाता हैं, यह सब आधुनिकीकरण के कारण ही संभव हुआ हैं।

संदर्भ

1. शुक्ला, सी. एम. 2013. शिक्षा के दार्शनिक एंव समाजशास्त्रीय आधार, नई दिल्ली : अनुभव पब्लिशिंग हाउस।
2. रुहेला, एस. पी. 2012. भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. पणिक्कर, के. एन. 2011. शिक्षा आधुनिकीकरण और विकास, नई दिल्ली : परिप्रेक्ष्य राश्ट्रीय शैक्षिक योजना एंव प्रशासन विश्वविद्यालय ।
4. कुमार, शरद 2008. भारतीय समाज , लखनऊ : भारत पब्लिकेशन्स ।
5. सिंह, योगेन्द्र 1986. मोडर्नाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन, जयपुर : रावत पब्लिकेशन ।
6. देसाई, ए. आर. 1971. ऐसेज ऑन मोडर्नाईजेशन ऑफ अन्डरडवलप्ड सोसायटी, बॉम्बे : ठक्कर एण्ड कम्पनी ।
7. डी, एन. मजुमदार 1958. कास्ट एण्ड़ कम्यूनिकेशन एन इण्डियन विलेज, नई दिल्ली : एशिया पब्लिशिग हाउस ।
8. आईजनस्टैड, एस. एन. 1969. मोडर्नाईजेशन प्रोटेस्ट एण्ड चेन्ज, नई दिल्ली : प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया ।
9. लेवी, मैरियन जे. 1954. कन्ट्रास्टिंग फैक्टर्स इन द मोडर्नाईजेशन ऑफ चाईना एण्ड जापान, इकोनॉमिक डवलपमेंट एण्ड़ कल्चर चेंज ।
10. सी, ई. ब्लेक 1966. द डायनेमिक्स ऑफ मोडर्नाईजेशन अ स्टड़ी इन कॉम्पेरेटिव हिस्ट्री, न्यूयार्क : हार्पर एण्ड़ रॉ ।